Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-138-141

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 138-141
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

Dr. Elizabethi

Assistant Professor, Mizoram Hindi Training College, Aizawl.

Corresponding Author :

Dr. Elizabethi

Assistant Professor, Mizoram Hindi Training College, Aizawl.

अहिंदी भाषी क्षेत्र में ICT आधारित हिंदी शिक्षण : मिज़ोरम के संदर्भ में

सारांश : वर्तमान समय सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी का युग है। शिक्षा के क्षेत्र में ICT ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सरल, रोचक, प्रभावी और व्यावहारिक बनाया है। भाषा शिक्षण के क्षेत्र में ICT की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि भाषा केवल पुस्तकीय ज्ञान से नहीं, बल्कि निरंतर अभ्यास और वातावरण से सीखी जाती है। अहिंदी भाषी क्षेत्रों में, जहाँ हिंदी भाषा का स्वाभाविक वातावरण उपलब्ध नहीं होता, वहाँ ICT हिंदी भाषा सीखने का प्रभावी माध्यम बन सकता है। मिज़ोरम जैसे राज्य में घर, विद्यालय, बाज़ार और सामाजिक जीवन में मुख्यतः मिज़ो तथा अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग होता है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को हिंदी सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते। प्रस्तुत लेख में अहिंदी भाषी क्षेत्र, विशेषकर मिज़ोरम के संदर्भ में ICT आधारित हिंदी शिक्षण की आवश्यकता, महत्व, उपयोगिता तथा भाषा-कौशलों के विकास में इसकी भूमिका पर विचार किया गया है। साथ ही एक वास्तविक उदाहरण के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि ICT के माध्यम से घर पर भी हिंदी भाषा का वातावरण निर्मित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द : ICT, हिंदी शिक्षण, अहिंदी भाषी क्षेत्र, मिज़ोरम, भाषा-कौशल, हिंदी वातावरण।

1. प्रस्तावना : आज का युग तकनीक और सूचना का युग है। शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी अर्थात् ICT ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को नई दिशा प्रदान की है। पहले शिक्षा मुख्यतः पुस्तक, शिक्षक और कक्षा तक सीमित थी, परंतु आज मोबाइल, इंटरनेट, यूट्यूब, टेलीविजन, व्हाट्सएप, ऑनलाइन सामग्री और डिजिटल साधनों के माध्यम से शिक्षा कक्षा की सीमाओं से बाहर निकलकर विद्यार्थी के घर तक पहुँच चुकी है।

भाषा शिक्षण में ICT का महत्व और भी अधिक है, क्योंकि

भाषा केवल नियमों को याद करने से नहीं सीखी जाती, बल्कि सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के निरंतर अभ्यास से सीखी जाती है। किसी भी भाषा को सीखने के लिए वातावरण अत्यंत आवश्यक होता है। जहाँ भाषा का स्वाभाविक वातावरण उपलब्ध होता है, वहाँ विद्यार्थी उस भाषा को सहज रूप से सीख लेते हैं। इसके विपरीत, जहाँ भाषा का वातावरण नहीं होता, वहाँ भाषा सीखना कठिन हो जाता है।

अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण की यही प्रमुख चुनौती है। विशेषकर मिज़ोरम जैसे राज्य में, जहाँ घरों में मिज़ो भाषा, विद्यालयों में अंग्रेज़ी और सामाजिक जीवन में मुख्यतः स्थानीय भाषा का प्रयोग होता है, वहाँ हिंदी का स्वाभाविक वातावरण बहुत कम मिलता है। ऐसी स्थिति में ICT आधारित हिंदी शिक्षण हिंदी भाषा के वातावरण निर्माण का एक प्रभावी साधन सिद्ध हो सकता है।

2. ICT का अर्थ और स्वरूप : ICT का पूरा नाम Information and Communication Technology है। हिंदी में इसे सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी कहा जाता है।

Information का अर्थ है — सूचना या जानकारी

Communication का अर्थ है — संप्रेषण या आदान-प्रदान

Technology का अर्थ है — तकनीकी साधन

इस प्रकार ICT का अर्थ है—ऐसे तकनीकी साधन जिनके माध्यम से सूचना प्राप्त की जाती है, उसका संप्रेषण किया जाता है और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में ICT के अंतर्गत मोबाइल, कंप्यूटर, इंटरनेट, टेलीविजन, रेडियो, यूट्यूब, व्हाट्सएप, गूगल फॉर्म, ई-पुस्तकें, ऑडियो-वीडियो सामग्री, ऑनलाइन कक्षाएँ, भाषा सीखने वाले ऐप और डिजिटल प्लेटफॉर्म आदि आते हैं। इन साधनों के माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान को केवल पढ़कर ही नहीं, बल्कि देखकर, सुनकर, बोलकर और अभ्यास करके सीखते हैं।

3. अहिंदी भाषी क्षेत्र में हिंदी शिक्षण की स्थिति : अहिंदी भाषी क्षेत्र वे क्षेत्र हैं जहाँ हिंदी जनभाषा या मातृभाषा के रूप में प्रयुक्त नहीं होती। ऐसे क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग सीमित रूप से विद्यालय, औपचारिक कार्यों या कुछ विशेष परिस्थितियों में ही होता है। मिज़ोरम भी ऐसा ही एक राज्य है, जहाँ हिंदी भाषा का स्वाभाविक सामाजिक वातावरण बहुत कम है।

मिज़ोरम में सामान्यतः घरों में मिज़ो भाषा का प्रयोग होता है। विद्यालयों में अधिकतर अंग्रेज़ी माध्यम या अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है। बाज़ार, सामाजिक जीवन, धार्मिक गतिविधियों और दैनिक व्यवहार में भी मिज़ो भाषा का ही अधिक प्रयोग होता है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को हिंदी सुनने और बोलने का अवसर बहुत कम मिलता है। परिणामस्वरूप वे हिंदी को केवल एक विषय के रूप में पढ़ते हैं, परंतु व्यवहारिक भाषा के रूप में उसका प्रयोग करने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

भाषा सीखने के लिए वातावरण, अभ्यास और रुचि तीनों आवश्यक हैं। यदि विद्यार्थी को हिंदी सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का अवसर नियमित रूप से मिले, तो वह धीरे-धीरे हिंदी भाषा से परिचित हो सकता है। इस दृष्टि से ICT अहिंदी भाषी क्षेत्र में हिंदी शिक्षण की कठिनाइयों को कम करने में सहायक सिद्ध होता है।

4. हिंदी वातावरण निर्माण में ICT की भूमिका : अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी शिक्षण की सबसे बड़ी आवश्यकता है—हिंदी भाषा का वातावरण। जब विद्यार्थी को कक्षा के बाहर भी हिंदी सुनने और बोलने का अवसर मिलता है, तब भाषा सीखना सहज हो जाता है। ICT इस वातावरण निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मोबाइल, यूट्यूब, टेलीविजन, ऑडियो-वीडियो सामग्री और व्हाट्सएप जैसे साधनों के माध्यम से विद्यार्थी घर पर भी हिंदी भाषा से जुड़ सकते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को छोटे-छोटे हिंदी वीडियो देखने, हिंदी बालगीत सुनने,

हिंदी कहानियाँ सुनने, सरल हिंदी संवाद देखने और हिंदी में छोटे वाक्य लिखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इससे विद्यार्थी हिंदी भाषा को केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे जीवन से जोड़कर सीखते हैं।

ICT का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह भाषा सीखने को रोचक बनाता है। बच्चे वीडियो, चित्र, ध्वनि और गतिविधियों के माध्यम से भाषा को अधिक आसानी से ग्रहण करते हैं। विशेषकर छोटे बच्चों के लिए कार्टून, बालगीत, कहानी और संवाद आधारित वीडियो हिंदी सीखने के प्रभावी साधन हो सकते हैं।

5. वास्तविक उदाहरण : ICT के माध्यम से हिंदी सीखने का एक वास्तविक उदाहरण हमारे अपने अनुभव में देखा जा सकता है। हमारे एक रिश्तेदार का छोटा बच्चा जब केवल पाँच-छह वर्ष का था, तब वह मोबाइल या टेलीविजन पर 'छोटा भीम' जैसे हिंदी कार्टून वीडियो देखा करता था। उसके घर और आसपास हिंदी बोलने का कोई विशेष वातावरण नहीं था। फिर भी वह नियमित रुप से हिंदी कार्टून वीडियो देखता और सुनता था। धीरे-धीरे उसने उन वीडियो से हिंदी शब्द, छोटे-छोटे वाक्य और बोलचाल की भाषा सीखनी शुरु कर दी। कुछ समय बाद वह हिंदी में सरल बातचीत करने लगा। उसने किसी औपचारिक कक्षा में हिंदी बोलना नहीं सीखा था, बल्कि हिंदी कार्टून वीडियो देखकर और सुनकर उसने हिंदी भाषा को स्वाभाविक रुप से ग्रहण किया।

यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि ICT के माध्यम से बच्चों के लिए घर पर भी हिंदी भाषा का वातावरण बनाया जा सकता है। यदि बच्चों को रोचक, सरल और आयु-उपयुक्त हिंदी सामग्री उपलब्ध कराई जाए, तो वे बिना दबाव के खेल-खेल में हिंदी सीख सकते हैं। यह अनुभव अहिंदी भाषी क्षेत्रों में ICT आधारित हिंदी शिक्षण की उपयोगिता को प्रमाणित करता है।

6. भाषा-कौशलों के विकास में ICT का उपयोग : हिंदी भाषा शिक्षण में चार मुख्य कौशलों का विकास आवश्यक है—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। ICT इन चारों कौशलों के विकास में सहायक है।

6.1 सुनने का कौशल : सुनने का कौशल भाषा सीखने का प्रथम चरण है। विद्यार्थी जब किसी भाषा को बार-बार सुनते हैं, तब वे उसके शब्दों, ध्वनियों, उच्चारण और वाक्य संरचना से परिचित होते हैं। ICT के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों को हिंदी ऑडियो, कहानी, कविता, संवाद और यूट्यूब वीडियो सुनने के लिए दे सकते हैं। इससे विद्यार्थियों में हिंदी सुनने और समझने की क्षमता विकसित होती है।

6.2 बोलने का कौशल : बोलने के कौशल के विकास के लिए मोबाइल का वॉइस रिकॉर्डर उपयोगी साधन है। विद्यार्थी अपना परिचय, छोटी कहानी, कविता या संवाद हिंदी में बोलकर रिकॉर्ड कर सकते हैं। बाद में अपनी आवाज सुनकर वे अपनी त्रुटियों को पहचान सकते हैं और सुधार सकते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

6.3 पढ़ने का कौशल : पढ़ने के कौशल के लिए शिक्षक व्हाट्सएप या अन्य डिजिटल माध्यमों से छोटे-छोटे हिंदी वाक्य, अनुच्छेद, कविता या कहानी विद्यार्थियों को भेज सकते हैं। विद्यार्थी घर पर उन्हें पढ़ सकते हैं। यूट्यूब वीडियो के साथ लिखित पाठ पढ़ने से सुनने और पढ़ने दोनों कौशलों का विकास होता है।

6.4 लिखने का कौशल : लिखने के कौशल के लिए हिंदी कीबोर्ड, Gboard और मोबाइल टाइपिंग अत्यंत उपयोगी हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को मोबाइल में हिंदी टाइप करना सिखा सकते हैं। विद्यार्थी छोटे शब्द, वाक्य और अनुच्छेद हिंदी में टाइप कर सकते हैं। इससे उनमें हिंदी लेखन के प्रति रुचि उत्पन्न होती है और वे धीरे-धीरे शुद्ध लेखन की ओर अग्रसर होते हैं।

7. शिक्षक की भूमिका : ICT आधारित हिंदी शिक्षण में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और प्रेरक होता है। अहिंदी भाषी क्षेत्रों में शिक्षक का दायित्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि विद्यार्थियों को हिंदी का स्वाभाविक वातावरण नहीं मिलता।

शिक्षक विद्यार्थियों को यह समझा सकते हैं कि मोबाइल और इंटरनेट का उपयोग केवल मनोरंजन के लिए

नहीं, बल्कि भाषा सीखने के लिए भी किया जा सकता है। शिक्षक विद्यार्थियों को उचित हिंदी वीडियो चुनना, हिंदी ऑडियो सुनना, हिंदी में वाक्य टाइप करना, अपनी आवाज रिकॉर्ड करना और सरल हिंदी सामग्री पढ़ना सिखा सकते हैं।

इसके साथ ही शिक्षक को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि ICT का उपयोग नियंत्रित, उद्देश्यपूर्ण और शैक्षिक दृष्टि से हो। विद्यार्थियों को आयु-उपयुक्त, सरल और सही भाषा वाली सामग्री ही दी जानी चाहिए। इस प्रकार शिक्षक ICT को हिंदी शिक्षण का प्रभावी साधन बना सकते हैं।

8. ICT आधारित गृहकार्य : ICT आधारित हिंदी शिक्षण में गृहकार्य को भी रोचक बनाया जा सकता है। शिक्षक विद्यार्थियों को निम्नलिखित प्रकार के कार्य दे सकते हैं—

घर पर दो मिनट का हिंदी वीडियो देखिए।
वीडियो में सुने गए पाँच हिंदी शब्द लिखिए।
अपना परिचय हिंदी में बोलकर रिकॉर्ड कीजिए।
व्हाट्सएप पर दो हिंदी वाक्य टाइप कीजिए।
एक छोटी हिंदी कविता सुनकर दो पंक्तियाँ पढ़िए।
हिंदी वर्णमाला का वीडियो देखकर पाँच अक्षर लिखिए।
किसी हिंदी कहानी को सुनकर उसका नाम लिखिए।

इस प्रकार का गृहकार्य विद्यार्थियों को बोझ नहीं लगता। वे रुचि के साथ हिंदी सीखते हैं। इससे घर पर भी हिंदी भाषा का अभ्यास होता है और धीरे-धीरे हिंदी वातावरण का निर्माण होता है।

9. निष्कर्ष : अहिंदी भाषी क्षेत्र में ICT आधारित हिंदी शिक्षण वर्तमान समय की आवश्यकता है। जहाँ हिंदी भाषा का स्वाभाविक वातावरण उपलब्ध नहीं है, वहाँ ICT हिंदी वातावरण निर्माण का प्रभावी माध्यम बन सकता है। मोबाइल, इंटरनेट, यूट्यूब, व्हाट्सएप, ऑडियो-वीडियो सामग्री और हिंदी कीबोर्ड जैसे साधनों की सहायता से विद्यार्थी घर पर भी हिंदी सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का अभ्यास कर सकते हैं।

मिज़ोरम जैसे राज्य में, जहाँ सामाजिक और पारिवारिक जीवन में मिज़ो भाषा तथा विद्यालयों में अंग्रेज़ी का अधिक प्रयोग होता है, वहाँ ICT हिंदी शिक्षण को सरल, रोचक और व्यवहारिक बनाता है। शिक्षक यदि विद्यार्थियों को सरल और उपयोगी ICT साधनों का सही प्रयोग करना सिखाएँ, तो विद्यार्थी हिंदी भाषा को अधिक रुचि, आत्मविश्वास और सहजता के साथ सीख सकते हैं।

अतः ICT केवल तकनीकी साधन नहीं, बल्कि अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी भाषा के वातावरण निर्माण, भाषा-कौशलों के विकास और प्रभावी हिंदी शिक्षण का महत्वपूर्ण माध्यम है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. शर्मा, रामकुमार. हिंदी भाषा शिक्षण. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर.
2. सिंह, सुरेश. भाषा शिक्षण के सिद्धांत. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
4. NCERT. भाषा शिक्षण और अधिगम. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद.
5. UNESCO. ICT in Education: A Critical Literature Review and Its Implications.
6. UNESCO Institute for Information Technologies in Education.

•